रविवार 15 नवंबर, 2026

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: सभोपदेशक 3: 14

"मैं जानता हूं कि जो कुछ परमेश्वर करता है वह सदा स्थिर रहेगा; न तो उस में कुछ बढ़ाया जा सकता है और न कुछ घटाया जा सकता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: 2 कुरिन्थियों 4: 6, 15-18

6 इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥

15 क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारे लिये हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिये धन्यवाद भी बढ़ाए॥

16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।

17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।

18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 65: 13 (से *1st* ,), 18 (होना), 22 (के लिए), 23

13 इस कारण प्रभु यहोवा यों कहता है,

18 ...इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूं, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा।

21 वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे।

22 ...ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे।

23 उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उन से अलग न होंगे।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. लूका 4: 1 (से *1st* ,)

1 फिर यीशु पवित्रआत्मा से भरा हुआ, यरदन से लौटा;

3. लूका 18: 18-30

18 सरदार ने उस से पूछा, हे उत्तम गुरू, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूं?
19 यीशु ने उस से कहा; तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक, अर्थात परमेश्वर।
20 तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न करना, हत्या न करना, और चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
21 उस ने कहा, मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूं।
22 यह सुन, यीशु ने उस से कहा, तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना सब कुछ बेच कर कंगालों को बांट दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
23 वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।
24 यीशु ने उसे देख कर कहा; धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है?
25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
26 और सुनने वालों ने कहा, तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?
27 उस ने कहा; जो मनुष्य से नहीं हो सकता, वह परमेश्वर से हो सकता है।
28 पतरस ने कहा; देख, हम तो घर बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।
29 उस ने उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं जिस ने परमेश्वर के राज्य के लिये घर या पत्नी या भाइयों या माता पिता या लड़के-बालों को छोड़ दिया हो।
30 और इस समय कई गुणा अधिक न पाए; और परलोक में अनन्त जीवन॥

4. यूहन्ना 5: 24, 25

24 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
25 मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे।

5. यूहन्ना 10: 14, 27-29

14 अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं।
27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।
28 और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
29 मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता।

6. यूहन्ना 17: 1-3, 22

[1] यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
[2] क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
[22] और वह महिमा जो तू ने मुझे दी, मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे की हम एक हैं।

7. 1 कुरिन्थियों 15: 50-54

[50] हे भाइयों, मैं यह कहता हूं कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते, और न विनाश अविनाशी का अधिकारी हो सकता है।
[51] देखे, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे।
[52] और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जांएगे, और हम बदल जाएंगे।
[53] क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले।
[54] और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तक वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

8. 2 कुरिन्थियों 5: 1-8

[1] क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है।
[2] इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें।
[3] कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
[4] और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
[5] और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।
[6] सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
[7] क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
[8] इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।

9. 2 तीमुथियुस 1: 8 (से,), 8 (लेकिन)-10

[8] इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से... सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुख उठा।
[9] जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर अपनी मनसा और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है।
[10] पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाश हुआ, जिस ने मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. **246: 27 (ज़िंदगी)-31**

जीवन शाश्वत है। हमें इसे जानना चाहिए और इसे साबित करना शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर हैं। तो आइए, हम अपने अस्तित्व के नज़रिए को बुढ़ापे और बर्बादी के बजाय सुंदरता, ताज़गी और निरंतरता के रूप में ढालें।

2. **42: 26 (में)-28**

... ईसाई विज्ञान में सच्चा मनुष्य ईश्वर द्वारा शासित है - अच्छाई से, बुराई से नहीं - और इसलिए वह नश्वर नहीं बल्कि अमर है।

3. **191: 24-27**

अस्तित्व का विज्ञान यह प्रकट करता है कि मनुष्य और अमरता, दोनों ही आत्मा पर आधारित हैं। भौतिक ज्ञान नश्वर मनुष्य को पदार्थ पर आधारित बताता है, और इसी आधार से शरीर की नश्वरता का निष्कर्ष निकालता है।

4. **247: 3-9, 13-18**

मैंने बुढ़ापे में उन दो चीज़ों को वापस आते देखा है जो खो गई थीं—दृष्टि और दाँत। 85 साल की एक महिला, जिसे मैं जानती थी, उसकी दृष्टि वापस आ गई। नब्बे साल की एक और महिला के नए दाँत आ गए थे—इनमें कृन्तक, रदनक, द्विशूल दंत और एक दाढ़ शामिल थे। साठ साल की उम्र में भी एक व्यक्ति के ऊपर और नीचे के सभी दांत पूरी तरह सलामत थे, और उनमें कोई छेद या सड़न नहीं थी।

अमरता, उम्र या क्षय से मुक्त, अपनी खुद की एक महिमा है, - आत्मा की चमक। अमर पुरुष और महिला आध्यात्मिक भावना के उदाहरण हैं, पूर्ण मन से खींचे गए और प्रेम के उन उच्च अवधारणाओं को दर्शाते हैं जो अपनी भौतिक भावना को पार करते हैं।

5. **248: 5-32**

भारतीयों ने अंतर्निहित वास्तविकता की कुछ झलकियाँ पकड़ीं, जब उन्होंने एक निश्चित सुंदर झील को "द ग्रेट स्पिरिट की मुस्कान" कहा। मनुष्य से अलग, जो आत्मा को व्यक्त करता है, आत्मा एक अस्तित्वहीन होगा; मनुष्य, आत्मा से तलाकशुदा, अपना अस्तित्व खो देगा। लेकिन ऐसा कोई विभाजन नहीं है, हो भी नहीं सकता, क्योंकि मनुष्य ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व में है।

मूर्तिकार अपनी गर्भाधान को पूर्ण करने के लिए संगमरमर को अपनी मूर्ति में बदल देता है। हम सभी मूर्तिकार हैं, विभिन्न रूपों में काम कर रहे हैं, विचारों को ढालने और तराशने का काम कर रहे हैं। नश्वर मन से पहले मॉडल क्या

है? क्या यह अपूर्णता, आनंद, दुःख, पाप, पीड़ा है? क्या तुमने नश्वर मॉडल को स्वीकार किया है? क्या आप इसे पुन: पेश कर रहे हैं? तब आप शातिर मूर्तिकारों और घृणित रूपों द्वारा अपने काम में प्रेतवाधित होते हैं। क्या आप अपूर्ण मॉडल के सभी मानव जाति से नहीं सुनते हैं? दुनिया इसे लगातार अपने टकटकी से पहले पकड़े हुए है। परिणाम यह है कि आप उन निचले पैटर्न का पालन करने के लिए उत्तरदायी हैं, अपने जीवनकाल को सीमित करते हैं, और अपने अनुभव को कोणीय रूपरेखा और मामले के मॉडल की विकृति में अपनाते हैं।

इसे ठीक करने के लिए, हमें पहले अपने टकटकी को सही दिशा में मोड़ना होगा, और फिर उस रास्ते पर चलना होगा। हमें विचार में आदर्श मॉडल बनाना चाहिए और उन्हें लगातार देखना चाहिए, या हम उन्हें भव्य और महान जीवन में कभी नहीं उकेरेंगे। निःस्वार्थता, अच्छाई, दया, न्याय, स्वास्थ्य, पवित्रता, प्रेम - स्वर्ग का राज्य - हमारे भीतर राज करो, और पाप, बीमारी, और मृत्यु तब तक कम हो जाएगी जब तक वे अंततः गायब नहीं हो जाते।

6. 260: 28-7

यदि हम विचारों को नश्वर आवरणों में लपेट दें, तो वे अपना अमर स्वरूप खो देंगे।

अगर हम शरीर को आनंद के लिए देखते हैं, तो हमें दर्द होता है; जीवन के लिए, हम मृत्यु को पाते हैं; सत्य के लिए, हम त्रुटि पाते हैं; आत्मा के लिए, हम इसके विपरीत, पदार्थ को पाते हैं। अब इस क्रिया को उल्टा कर दें। सत्य और प्रेम में शरीर से दूर देखो, सभी खुशी, सद्भाव और अमरता का सिद्धांत। धीरज, अच्छे और सच्चे विचार को दृढ़ता से पकड़ें, और आप अपने अनुभवों के अनुपात में इन्हें अपने अनुभव में लाएंगे।

7. 76: 22-31

पाप रहित आनन्द, - जीवन की पूर्ण सद्भाव और अमरता, एक दिव्य सुख या पीड़ा के बिना असीमित दिव्य सौंदर्य और अच्छाई का होना, - एकमात्र सत्य, अविनाशी पुरुष का निर्माण करता है, जिसका अस्तित्व आध्यात्मिक है। अस्तित्व की यह स्थिति वैज्ञानिक और अक्षुण्ण है, - एक पूर्णता केवल उन लोगों द्वारा समझ में आती है जिनके पास दिव्य विज्ञान में मसीह की अंतिम समझ है। मृत्यु कभी अस्तित्व की इस स्थिति को जल्दबाजी नहीं कर सकती, क्योंकि अमरता प्रकट होने से पहले मृत्यु को दूर करना होगा, प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

8. 190: 14-20

मानव जन्म, वृद्धि, परिपक्वता, और क्षय के रूप में घास से वसंत के रूप में सुंदर हरे रंग के ब्लेड के साथ होते हैं, बाद में मुरझा जाते हैं और अपनी मूल शून्य पर लौट आते हैं। यह नश्वर लगने वाला लौकिक है; यह कभी भी अमर होने में विलीन नहीं होता है, लेकिन अंत में गायब हो जाता है, और अमर आदमी, आध्यात्मिक और शाश्वत, वास्तविक आदमी पाया जाता है।

9. 476: 32-5

यीशु ने विज्ञान में सिद्ध पुरुष को सही ठहराया, जो उसे दिखाई दिया जहां पाप करने वाला नश्वर मनुष्य नश्वर प्रतीत होता है। इस सिद्ध पुरुष में उद्धारकर्ता ने परमेश्वर की अपनी समानता को देखा, और मनुष्य के इस सही दृष्टिकोण

ने बीमारों को चंगा किया। इस प्रकार यीशु ने सिखाया कि ईश्वर का राज्य अक्षुण्ण, सार्वभौमिक है, और वह मनुष्य शुद्ध और पवित्र है।

10. 428: 3 (ज़िंदगी)-14, 22-29

जीवन वास्तविक है, और मृत्यु भ्रम है। यीशु के मार्ग में आत्मा के तथ्यों का प्रदर्शन भौतिक अर्थों के सबसे गहरे दर्शन को सामंजस्य और अमरता में बदल देता है। इस सर्वोच्च क्षण में मनुष्य का विशेषाधिकार हमारे मास्टर के शब्दों को साबित करना है: "कि यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" झूठे न्यासों और भौतिक साक्ष्यों के बारे में विचार करने के लिए ताकि आध्यात्मिक तथ्य सामने आ सकें — यह महान प्राप्ति है जिसके माध्यम से हम असत्य को मिटा देंगे और सत्य को स्थान देंगे। इस प्रकार हम मंदिर, या देह को सच में स्थापित कर सकते हैं, "जिसका निर्माता और निर्माता भगवान है।"

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं। हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

11. 296: 4 (प्रगति)-13

प्रगति अनुभव से पैदा होती है। यह नश्वर मनुष्य का पकना है, जिसके माध्यम से नश्वर को अमर के लिए गिरा दिया जाता है। या तो यहां या उसके बाद, पीड़ित या विज्ञान को जीवन और मन के बारे में सभी भ्रमों को नष्ट करना होगा, और भौतिक भावना और स्वयं को पुन: उत्पन्न करना होगा। अपने कर्मों के साथ पुरानी मानवता को बंद करना होगा। कामुक या पापी कुछ भी अमर नहीं है। एक झूठी भौतिक भावना और पाप की मृत्यु, कार्बनिक पदार्थों की मृत्यु नहीं है, जो मनुष्य और जीवन, सामंजस्यपूर्ण, वास्तविक और शाश्वत को प्रकट करती है।

12. 288: 27-28

विज्ञान अमर मानव की गौरवशाली संभावनाओं को प्रकट करता है, नश्वर इंद्रियों द्वारा हमेशा के लिए असीमित।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6